International Journal of Applied Research 2016; 2(11): 27-30

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(11): 27-30
www.allresearchjournal.com
Received: 06-09-2016
Accepted: 07-10-2016

डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला–वलसाड–396050 (गुजरात)

Correspondence
डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला–वलसाड–396050 (गुजरात)

आस्था और मूल्यों के संघर्ष की कथारू 'गोधूलि'

डॉ. उत्तम पटेल

सारांश
'गोधूलि' भैरप्पा का सुप्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास को भैरप्पा ने 'तब्बिलयु नीनादे मगने' नाम से कन्नड़ में लिखा है। इसमें भैरप्पा ने भारतीय एवम् पाश्चात्य मूल्यों, दो पीढ़ियों एवम् पति–पत्नी के बीच के संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए भारतीय मूल्यों की प्रतिस्थापना की है। इस उपन्यास में भैरप्पा ने कालिंग गौड़ा और नन्हा कालिंग, तायव्वा और कालिंग, तायव्वा और हिल्डा, वेंकटरमण और कालिंग, वैंकटरमण और हिल्डा, वेंकटरमण, हिल्डा और कालेनहल्लि के ग्राम्य–जन तथा कालिंग और हिल्डा के बीच उभरते मूल्यों के संघर्ष और उपन्यास के अंत में कालिंग द्वारा वापस भारतीय मूल्यों की और लौटना चित्रित किया गया है।

कूट शब्दः पुण्यकोटि, कालिंग गौड़ा, हिल्डा, आस्था, मूल्य

प्रस्तावना
भैरप्पा के साहित्य में अगर कोई महत्वपूर्ण विचारधारा है तो वह है परम्परा और आधुनिकता के बीच के संघर्ष का चित्रण। उनके प्राय सभी उपन्यासों में इस विशेषता को देखा जा सकता है। भैरप्पा के उपन्यासों में धर्म, लोकाचार, सनातनता, जाति, जीवन की सार्थकता जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। 'गृहभंग' में उन्होंने समाज और परिवार का चित्रण किया है। 'वंशवृक्ष' में उन्होंने सनातन धर्म के मूल्यों की सार्थकता पर विचार किया है। इससे पूर्व 'दाटू' में उन्होंने जाति व्यवस्था की उलझनों पर प्रकाश डाला है। 'पर्व' में उन्होंने महाभारत की कथा को आधुनिक सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है। तो 'गोधूलि' में आस्था और मूल्यों के संघर्ष का बहुत ही सूक्ष्म व मार्मिक चित्रण हुआ है। जिसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

अरुणाद्रि पर्वत की तलहटी में कालेनहल्लि नामक गाँव है। जिसका मुखिया कालिंग गौड़ा है। उसकी गौशाला में पुण्यकोटि गौ की नस्ल की गायें हैं। जिसे वह कभी नहीं डाँट पाता। संक्रांति के पर्व पर खीर बनाते समय वह पहले पुण्यकोटि की पूजा करता है। गाय से संबंधित कथा जुबानी सुनाकर अर्थ बताता है। कालिंग गौड़ा ने गायें दूध के लिए नहीं पाली हैं। वह मानव माता से गौ माता को अधिक पुण्यवान मानता है और उसका तर्क है कि "बछड़े के पी लेने के बाद बचने वाला दूध ही हमारा होता है।"[1] जबकि उसका पोता कालिंग गायों के दूध को बेचना शुरू करता है। दूध दुहते समय बछडों को दूध पीते देखकर हिल्डा उसे बँधवा देती है और गायों को लकड़ी के चौखटे में फँसाकर दूध निकलवाती है। सारा दूध होटल भेज दिया जाता है। दूध का अधिक उत्पादन हो सके, उसके लिए गायों को पौष्टिक आहार दिया जाता है और दूध निकालने के लिए वह रबर की नली लगा बिजलीवाला दूध निकालने की मशीन खरीदता है। ये लोग गाय का पूरा दूध निकाल लेते हैं और बछड़े के लिए जरा भी रहने नहीं देते। एक बछड़ा मरी गाय का दूध निकालने के लिए उसके सामने नकली बछड़ा रखा देख जब वेंकट विरोध के सूर में कहता है–"बिना बछड़े की गाय को दुहना महापाप होता है। बछड़ा होने पर आप उसमें दूध क्यों नहीं छोड़ते?"[2] तो कालिंग की पत्नी हिल्डा वेंकट को उत्तर देते हुए कहती है– "आपको मालूम नहीं बछड़े के लिए दूध छोड़ना आर्थिक रूप से लाभप्रद नहीं। दूध के लिए ही तो गाय पाली जाती है।"[3] एक स्त्री के मुँह से ऐसी बात सुनकर वेंकट को क्रोध आता है और वह उठकर जाने को तैयार होता है तो हिल्डा उसका हाथ पकड़कर उसे रोकती है। हिल्डा के यह कहने पर कि हमारे देश में हर चीज को वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से देखा जाता है। वह कहती है कि हम दूध के लिए आवश्यक बछड़ों को रखकर बाकी बछड़ों को मार देते हैं। उनके पेट में रूमिनेट होता है जिसमें एन्जाइम नाम का पदार्थ मिलता है, जिसका उपयोग दूध से पनीर बनाने के लिए किया जाता है। बछड़ों की खाल का उपयोग जूतों के लिए करते हैं। वह हिल्डा को गर्मायी गाय को वीर्य का इंजेक्शन देते हुए देखता है। अतः वेंकटरमण सोचता है– "दूध न देनेवाले पशुओं को चारा नहीं, जीने का अधिकार नहीं। दूध दुहने के लिए बछड़े की जरूरत नहीं। उस बछड़े को मारकर उसके पेट के पदार्थ को चीज बनाने के उपयोग में लाते हैं।

छड़ी की चोट से मार–मार खून निकाल कर बाद में उसका चमड़ा उतार कर बढ़िया बूट बनाते हैं। मशीन से दूध निकालते हैं। गाय गर्मा जाये तो ट्यूब का प्रयोग करते हैं। बिजार के पास ले जाने से आर्थिक दृष्टि से नुकसान होता है।"[4] इस प्रकार गौड़ा के लिए गाय माता है तो कालिंग के लिए दूध उत्पादन का एक साधन मात्र।

कालिंग गौड़ा चरागाह से आती गायों को बाँसुरी बजाकर बुलाता है। उसकी गायों के नाम गंगा, गौरी, तुंगभद्र, पारवती, सरस्वती, धर्मदेवी, रंगनायकी, सीता, कामधेनु आदि हैं जो देवियों के नाम पर से रखे हैं। गायों को जब वह नाम लेकर पुकारता है तो उस नाम वाली गाय उसकी ओर गरदन उठाकर देखती है। गायों के बहाने वह देवियों को याद कर पुण्य कमाता है। जबकि कालिंग, गौशाला की प्रत्येक गाय को नंबर से पहचानता है।

वीर्य, गर्भ, योनि आदि शब्द बोलने में कालिंग की पत्नी को शर्म आती न देख वेंकट सोचता है–"कालिंग यदि विदेश न जाता और यदि जाता भी पर इस विदेशी औरत से शादी न करता तो गौड़ा की गौशाला का पुण्य बचा रहता, नष्ट न होता।"[5] वेंकट द्वारा यह कहने पर कि "आपने गौ का अर्थ क्या समझ रखा है? वह तो सारे विश्व का प्रतीक है। विश्व की समस्त क्रियाओं के देवतागण उसके शरीर में बसते हैं। उसके सींगों की जड़ में ब्रह्मा–विष्णु रहते हैं, सिर में सभी तीर्थ हैं। दोनों आँखों में सूर्य और चंद्र, दाँतों में वायु, जबान में वरुण, हुँकार में विद्या, अग्नि देवता और सरस्वती दोनों होठों में प्रातः और संध्या, चारों पाँवों में चार धर्म, मूत्र में गंगा, थनों में चार सागर, एक–एक रोम में एक–एक देवता कुल तैंतीस करोड़ देवता हैं उसमें।"[6]

तो दूसरी और घर जाने पर हिल्डा वेंकट के बारे में सोचती है कि शांति से चर्चा करके अपने घर जाने के बदले वह उसे और उसकी समस्त जाति को असभ्य कह कर गाली देकर गया है। सुबह उठने पर वह जमाल को बुलाकर कहती है कि मुझे आज एक जवान गाय का मांस चाहिए। हमारी गौशाला से एक पुण्यकोटि की जवान गाय लाओ। जमाल गाय–वध से उत्पन्न होनेवाली स्थिति के बारे में उसे समझाता है। किन्तु फिर भी वह नहीं मानती। जमाल एक पुण्यकोटि गाय को लाता है और उसकी गर्दन काट डालता है। गाय के मर जाने पर वह जमाल से कहती है कि " ...कल उस पुजारी ने कहा था। तुमने भी सुना था– क्या गाय की आँखों में सूर्य और चंद्र हैं? थनों में चारों सागर हैं? देह में पता नहीं किन–किन भागों में कोई तैंतीस करोड़ देवता हैं।"[7] और वह गाय की दोनों आँखों में छुरा भोंक देती है। उसके थनों में छुरा चुभोकर देखती है। और कहती है कि इसमें देवता कहाँ हैं? बाद में गौमांस पकाकर खाती है। इस प्रकार यहाँ एक और भारतीय एवम् पाश्चात्य मूल्यों के बीच के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

गौड़ा को सरकारी हुक्म मिलता है जिसमें उसकी डेढ़–सौ एकड़ चरागाह पर खेती करने का हुक्म होता है। तहसीलदार उन्हें चरागाह बचाने का उपाय सूझाता है। जिससे कालेनहल्लि की चरागाहें तो बच जाती हैं किन्तु अन्य गाँव वाले अपनी चरागाहों में खेती करने लगते हैं। जिससे वहाँ की गायों के लिए चरने की भूमि नहीं रहती अतः वे लोग अपने जानवरों को पहाड़ की तलहटी की ओर हाँक देते हैं। वहाँ का चारा खत्म होने पर पशु कालेनहल्लि के चरागाहों की ओर आते हैं। उसकी ओर पहले तो कालिंग भी ध्यान नहीं देता किन्तु चिण्णय्या द्वारा भीतर की बात बताने पर उसे गुस्सा आता है और वह चिण्णय्या के बेटे यंकटा द्वारा ग्वालों को तो भगा देते हैं, किन्तु गायों को मारने नहीं देता। एक साल गौड़ा को अपने पशुओं के लिए हरे चारे की कमी पड़ जाती है किन्तु पुराने भंडार के कारण काम चल जाता है। किन्तु वह सोचता है कि अगले वर्ष यदि घास पर दूसरों के जानवर आए तो अपने जानवरों का क्या होगा? सरकार की बात आने पर वे तहसीलदार से मिलने जाते हैं। और चरागाह में दूसरे गाँव के पशुओं के आने की समस्या के बारे में बात करते हैं तो तहसीलदार उन्हें काँजी–हाउस बनाने के लिए कहते हैं जिसमें दूसरों की जमीन में चरने पर मवेशियों को बंद कर दिया जाता है और हरेक मवेशी के लिए उसके मालिक से आठ आने दंड वसूला जाता है।

शिंगरी गौड़ा काँजी–हाउस का ठेका लेता है। कालेनहल्लि के लोग पहाड़ की तलहटी में चरनेवाले सभी मवेशियों को काँजी हाउस में बंद कर देते हैं जिससे अच्छी रकम मिलती है। शिंगरी गौड़ा को तो जैसे कोई नया धंधा मिल जाता है। एक दिन तो वह गाँव के ही दो बैलों को काँजी–हाउस में बंद कर देता है तो कालिंग उसका विरोध करता है। एक बार शिंगरी गौड़ा एक गाभिन गाय को काँजी–हाउस में बंद कर देता है। गौड़ा को यह पता चलने पर कि गाय गाभिन है,वह देखने जाता है तो पता चलता है कि वह आज–कल में ब्यायेगी। ठेकेदार ने उसे चारा–पानी कुछ नहीं दिया है, जानकर उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह ठेकेदार पर गुस्सा करता है और काँजी–हाउस की चाबी फेंकर वह गौड़ा से ही कहता है कि तुम्हीं काँजी–हाउस रख दो। वह गाय को अपने घर ले जाता है। जहाँ वह एक बछड़े को जन्म देती है। गाय का मालिक गाय को खोजते हुए आता है तो गौड़ा उस पर गुस्सा करता है। उसके द्वारा गाय की प्रसूति और पाँच दिन के दंड देने की बात पर गौड़ा मना कर देता है। काँजी हाउस का ठेका शिंगरी गौड़ा से लेकर यंकटा को दिया जाता है।

तो दूसरी ओर तलहटीवाली सत्तर एकड़ जमीन कालिंग अपने नाम करवा लेता है। मंदिर और तालाबवाली वाली जमीन भी वह अपने नाम पट्टे पर करवा लेता है। पुरानी जमीन के साथ नई जमीन की चकबन्दी हो जाती है। जमीन को गिरवी रखकर वह सरकार से पच्चीस हजार रुपये कर्ज लेता है। पहाड़ की तलहटी में एक नया मकान बनवाता है। सिंचाई के लिए पंप लाता है। जमीन के अंदर वह लोहे के पाइप डलवाता है। खेत में पानी ले जाने के लिए नालियाँ बनवायी जाती हैं। खेत में जानवरों को रोकने के लिए काँटेदार तार लगाया जाता है। गोबर की जगह उर्वरक लाया जाता है। अपनी जमीन को वह 'फार्म' कहता है। इस प्रकार जहाँ कालिंग गौड़ा चरागाह बचाना चाहता है वहाँ नन्हा कालिंग चरागाह को खेती में परिवर्तित कर देता है।

क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ने वाले नन्हें कालिंग द्वारा प्रिन्सीपाल के यहाँ खाना खाने पर और बाद में ऊबकाई आने पर जब उसे यह जानकारी मिलने पर कि उसे परोसा गया माँस गाय का ही था। उसे उल्टी आ जाती है। तब वह सोचता है– "मैं कालिंग ग्वाला का वंशज हूँ! हमारे लिए गौ भगवान के समान होती है। ऐसे में मैंने गोमाँस खा लिया! मुझे ध्यान ही नहीं आया कि ईसाई और विशेषकर विदेशी फादर भी गोमाँस खाते हैं। मैं यह कैसा पाप कर्म कर बैठा?"[8] जब कि हिल्डा द्वारा पुण्यकोटि का वध करवा कर पकाये गए माँस को वह खा जाता है। इस प्रकार जहाँ एक ओर कृष्ण पुण्यकोटि गाय को बचाने के लिए अपने प्राण त्यागता है वहाँ हिल्डा अपने अहम् की तृष्टि के लिए पुण्यकोटि की हत्या करवाती है।

जोइस की मृत्यु हो जाने पर गौड़ा वेंकटरमण से गोदान करवाता है। गौड़ा भी मरने से पहले दो पुण्यकोटि गायों का दान वेंकटरमण को करता है। कालिंग गौड़ा पुण्यकोटि गाय के मंदिर का निर्माण कार्य शुरू करता है। जबकि दूसरी और हिल्डा पुण्यकोटि का वध करवाकर उसका माँस खाती है। कालिंग द्वारा यह पूछने पर कि तुमने गाय क्यों कटवायी थी तो वह कहती है कि उस पुजारी ने मुझे चिढ़ा दिया था।

गौड़ा की तेरहवीं के दिन क्रिया के लिए वेंकट द्वारा कालिंग को सिर मुँडाने के लिए कहने पर वह मना कर देता है और कहता है कि 'मुझे इस सब में विश्वास नहीं।'[9] सूतक निवारण के लिए वेंकट द्वारा पंचगव्य आचमन करने के लिए देने पर वह एक ही बार लेता है। पीने का प्रयास करने पर गोबर और मूत्र की बदबू आने से उसे उबकी आती है तो वह उसे फेंक देता है।

कालिंग मंदिर के सरोवर के पानी का उपयोग अपनी कृषि के लिए शुरू कर देता है। जिसका वेंकट विरोध करता है तो वह कहता है कि दादा ने सरोवर बनाने में रुपयों का दान कर दिया और घर खाली करके मर गए। अगर उन रुपयों को बैंक में रखा जाता तो वह सैंकड़ो बन जाते। उसका मानना है कि जो कुछ परमार्थ के लिए है वह जीवनोपयोगी भी होना चाहिए। इस प्रकार कालिंग की नजर पैसे बनाने पर है। वह घर में एक मुसलमान नौकर रखता है, ब्रेड खाता है। कालिंग को गाँववालों से कोई डर नहीं है क्योंकि उसे गाँव की जरूरत नहीं है।

कालिंग की पत्नी गोरी मेम हिल्डा को खाने के लिए बीफ और अण्डे चाहिए, जिसके लिए कालिंग मुर्गी पालने के बारे में सोचता है। मंदिर के विग्रह का पानी उसके लिए 'अनक्लीन पदार्थ' मात्र है। वह रबर के जूते मंदिर के बाहर नहीं उतारती। जिसके कारण वेंकट उसे प्रसाद नहीं देता। क्योंकि "हमारे भगवान और हमारी पूजा में जो विश्वास नहीं रखते उन्हें प्रसाद खाने का अधिकार नहीं है।"[10]

कालिंग द्वारा बूढ़े गोरुओं को कसाई के हाथ में बेच दिए जाने के विरोध पर वेंकटरमण कहता है– "मैं आज तक पूजा के समय सदा यही प्रार्थना करता था– गौड़ दादा के वंश का उद्धार हो। पर यदि तुम्हारे मन में यही विचार है तो भले ही गौड़ा दादा नरक जायें, तुम्हारे वंश का उद्धार नहीं होना चाहिए।"[11] –सुनकर कालिंग अपमान महसूस करता है। तायव्वा को जब बेटे की बहू–पोते के समाचार मिलते हैं तो वह सोचती है कि गोरे लोग तो गाय का माँस खाते हैं। जिस बेटे ने बूढ़े गोरुओं को कसाई के हाथ बेच दिया वह गायों को मार कर भी खा सकता है। अतः वह अपने पशुओं की गिनती करके रखती है।

एक दिन तायव्वा शुक्रवार के दिन घर पर रंगोली बना रही होती है कि कालिंग अपनी पत्नी के साथ वहाँ आता है। तायव्वा ने घर को गोबर से लीपा था उसके बुलाने पर वह भीतर जाती है। बाद में वह गौशाला देखने जाती है जिससे उसके पैर में गोबर लग जाता है। घर से बाहर निकलने पर वह पाँव धोती है। कालिंग उसके पैर धुलवाता है। जिसे देखकर तायव्वा सोचती है– "बाहर से आते समय हरेक आदमी पाँव धोकर भीतर जाता है। पर भीतर से जाते समय पाँव धोकर गयी। हरेक देश में पत्नी पति के पाँव धुलाती है, पर इसने अपनी पत्नी के पाँव धुलाये।"[12] ऐसी बहू के आने के दुर्भाग्य से तायव्वा रो पड़ती है।

पिता के मरने के बाद घर का खर्चा निकालने के लिए वेंकट मैसूर जाने का निश्चय करता है किन्तु गौड़ा उसे पुश्तैनी काम करने को कहता है। गौड़ा की बात मानकर वह वहीं रह जाता है और ज्योतिष और पौरोहित्य से उसे आमदनी होने लगती है। वेंकट का विवाह करवाया जाता है। अग्रहार में एक नए स्कूल की मंजूरी मिलती है तो गौड़ा उसमें अध्यापक के रूप में वेंकट को नौकरी दिलवाता है।

जब कि गोहत्या पर गाँववालों द्वारा तम्बाकू के खेतों को नुकशान करने पर कालिंग की शिकायत पर गाँव में पुलिस आती है और कालिंग के घर पर हमला और खेती में नुकसान के लिए चार हजार रुपये ऐंठकर चली जाती है। वेंकट उससे मिलता है तो कालिंग कहता है–"...तंबाकू के लिए सरकार स्पेशल टैक्स लगाती है। मैंने जब तंबाकू बोया तब वह सरकार के खाते में आ गया था। अब मेरी सारी फसल नष्ट हो चुकी है। मैंने सरकार को केवल यही सूचित किया था कि मैं टेक्स दे नहीं सकता। नष्ट क्यों हुआ यह प्रश्न तो उठना ही था, मुझे असल बात बतानी पड़ी।"[13] तब वेंकट कहता है कि "...अब पुलिस के आने से सारे गाँव में तुम्हारे प्रति फिर असंतोष फैल गया है। तुम्हारी भलाई के लिए बताने आया था।" – सुनकर कालिंग उससे गुस्सा करते हुए कहता है– "यह कह कर छाती फुलाने की जरूरत नहीं है कि तुम मेरी दी हुई भिक्षा खा रहे हो। आज घर में जो खा रहे हैं किसकी जमीन का? मेरे दादा ने तुम्हें भिक्षा में नहीं थी वह जमीन?"[14] वेंकट के यह कहने पर कि वह कोई भिक्षा नहीं। भगवान की पूजा करने के लिए मेरे नाम लिखी गयी। तो कालिंग कहता है कि तुम्हें मेरे साथ रहना चाहिए और गाँव वालों का विरोध करना चाहिए। लोग और तावय्या भी वेंकट से दान दी गयी जमीन न छोड़ने को कहते हैं। किन्तु स्वाभिमानी वेंकट दान–पत्र कालिंग के मुँह पर मार आता है। इस प्रकार गौड़ा ने जो दान किया था वह कालिंग के लिए सिर्फ भिक्षा मात्र है।

गो–हत्या से टूट चुकी तायव्वा की मृत्यु पर गाँववालों द्वारा कालिंग को न बुलवाने के मुद्दे पर हिल्डा उससे कहती है–"तुम्हें बुलाये बिना शव–संस्कार का उन्हें क्या अधिकार है? डियर, तुम इस पाइंट पर लड़ सकते हो।"[15] माँ की तेरहवीं में भी उसे बुलाया नहीं जाता। तो वह पत्नी के साथ तहसील जाकर सिनेमा देखता है। तेरहवीं के बारे में वह अपने नौकर मल्लेशी से पूछता है तो वह कहता है कि लोगों ने तो उसे एक बड़ा पर्व ही कर दिया। कालिंग के यह पूछने पर कि मेरे बारे में कोई बात हुई, तो मल्लेशी कहता है– "कहते थे हरामखोर पता नहीं यह किसके बीज को पड़ा? इसके दादा ने गौ के लिए मंदिर बनाया। यह हरामखोर गो–हत्या करके मांस खाता है। अच्छा हुआ मर गयी, वह पुण्यात्मा स्त्री थी। उसे सचमुच स्वर्ग मिलेगा। उस चांडाल हरामजादे और इसकी पत्नी के मुँह में कीड़े पड़ेंगे।"[16] इतने में होन्ना वहाँ आता है और वेंकट द्वारा दान में मिले खेत के बारे में क्या करना है, पूछता है। उसके सिर को मुँडा हुए देखने पर वह पूछता है तो वह कहता है–"कल माँजी की तेरहवीं के लिए मुँडाया है।"[17] अपनी जगह पर होन्ना द्वारा शिर मुँडाने की बात सुनकर उसके शरीर में कँपकँपी होने लगती है।

उसी दिन शाम को दो नंदी खिलाने वाले आते हैं। जिन्होंने कालिंग के दादा से पचास रुपये कर्ज लिया था, वह उसे लौटाने आये हैं। वे ये पैसे मंदिर के पुजारी वेंकट को देने को कहता है तो वे कहते हैं–"तुम्हारे दादाजी की दान में दी जमीन को छोड़ देने वाला पुजारी इस पैसे को छुएगा?"[18] कालिंग के मना करने पर नोट उसके सामने रखकर और सीता माता इसकी साक्षी है, कहकर वे चले जाते हैं।

कालिंग अपने फार्म हाऊस में बाड़ लगवाता है तो गाँव वाले एक ऐसी बाड़ लगाते हैं जिससे फार्म की ओर से मंदिर और उस पहाड़ की ओर न जाया जा सके।

हिल्डा का दूध सूख जाने पर बच्ची को दूध नहीं मिलता। जिससे उसके रोने–धोने का ठिकाना नहीं रहता। एक दिन तो बच्ची इतना रोती है कि उसका स्वर आकाश को छूने लगता है। कालिंग बच्ची को चुप कराने कोशिश करता है जिसे नौकर मल्लेशी देखता है, तो कहता है– "किसी गाय के थन से इसका मुँह लगा दीजिए, फटाफट दूध पीने लग जायेगी और चुप हो जायेगी। मैंने ऐसा देखा है।"[19] कालिंग इस सुझाव पर अमल करते हुए एक स्वस्थ गाय के थन से बच्ची का मुँह लगाता है तो वह लात मार देती है। दूसरी गायें भी ऐसा ही करती हैं तो कालिंग हिल्डा से कहता है– "इन गायों को रबर की नली लगाकर मशीन से दूध निकवाने की आदत पड़ गयी है। अपने बछड़े को ही दूध पिलाने की आदत नहीं। वे मनुष्य के बच्चे को क्या दूध पिलायेंगी?"[20] तब हिल्डा के यह पूछने पर कि अब क्या किया जाये, वह कहता है–"... हमारे पास पुण्यकोटि नस्ल की गाय ऐसी ही थी। उस नस्ल की कोई भी गाय हो तो बच्चे को दूध पीने देगी।"[21] वह आगे कहता है कि माँ ने मरने से पहले वेंकट को सब गायें दे दी हैं। इसके सिवा किसी के पास पुण्यकोटि गायें नहीं हो सकतीं। कालिंग वेंकटरमण से बच्ची को पुण्यकोटि गाय का दूध पिलाने के लिए बिनती करता है। तो वह कहता है– "तुमसे...तुम्हारी पत्नी से पैदा होकर जो बड़ा हुआ है, उसका धर्म की दृष्टि से मरना ही अच्छा है। उसे बचाने के लिए मान लो मैं अपनी गाय दे भी दूँ तो आगे उसके पेट से पैदा होने वाले बच्चे, पोते और पड़पोते गायों को मार खायेंगे।"[22] तो कालिंग की आँखों में आँसू भर आते हैं। उसे देखकर वेंकट पसीजता है और कहता है कि मैं नौकर को चार दिन के लिए

पुण्यकोटि गाय देता हूँ। और "...कालिंग ने बछड़े को छोड़ दिया। वह दौड़कर थनों में मुँह मारने लगा। वह एक तरफ से थन का दूध पीने लगा। मल्लेशी ने दूसरी तरफ बैठकर दूसरा थन बच्ची के मुँह में लगा दिया। बच्ची जरा झिझकी। मल्लेशी ने थन दबाकर दूध की धार मुँह में गिरा दी। एक बार दूध हलके से उतरते ही बच्ची दूध पीने लगी।"[23] जिसे देखकर हिल्डा को आश्चर्य होता है। तो कालिंग को अपना बचपन याद आता है जब माँ का दूध सूख जाने पर उसे भी गाय के थन से दूध पिलाया गया था।

माँ की मृत्यु के बाद कालिंग की गौशाला में कुछ गाय–बैल लाये गए थे। जो हिल्डा की दृष्टि से उपयोगी नहीं थे। इसे बेचने के लिए वह करीम को बुलवाती है। वह गाय के एक व्यापारी को भेजने की बात करता है जो मवेशियों को बंबई भेज देता है जहाँ उन्हें हलाल कर उनका मांस डिब्बों में बंद करके बेचता है।

हिल्डा से वह बीस दिन पहले उसने जिस आदमी को बूढ़े गाय–बैल बेचे थे, उस शकूर से मिलने पर वह बताता है कि उसने जिले के ठेकेदार को बेच दिए थे। उससे मिलने पर वह बंबई के एक बड़े ठेकेदार को बूढ़े मवेशी बेचने की बात करता है। घर से निकल ने पर हिल्डा से वह सारी बात बताता है तो वह उसका विरोध करती है। कालिंग के यह कहने पर कि "हमारी बच्ची जब मरने को थी तब अपने थन से दूध पिला कर उसको बचाने वाली गाय को भी बुढ़ापे में माँ को पालने के समान पालना चाहिए। तुमने जिन जानवरों को बेच दिया है वे भी बूढ़े माँ–बाप ही हैं।"[24] –सुनकर हिल्डा दंग रह जाती है।

बंबई जाकर वह बड़े ठेकेदार से मिलकर अपने पशुओं को लेने आने की बात करता है। ठेकेदार उसे एक मैदान में ले जा कर अपने गोरुओं को खोजने को कहता है। वह अपनी गायों को नाम लेकर पुकारता है किन्तु कोई भी गाय उसकी ओर नहीं देखती। वहाँ तो बहुत सारे गोरु हैं। जिसे देखकर वह सोचता है कि काटने के लिए ले जाने वाले सारे गोरू उसके अपने हैं। वह चाहता है कि सभी गोरूओं को खरीद कर बचा लें। किन्तु उसकी जेब में इतने रुपये नहीं हैं। वह निराश हो वापस घर को निकलता है। वह सोचता है कि हिल्डा उसके साथ रहेगी या छोड़कर चली जाएगी? आगे वह सोचता है – हमें टैक्टर की भी जरूरत है और गौपूजा की भी। किन्तु यदि वेंकट यहाँ होता तो कहता कि "टैक्टर को तोड़–फोड़कर चकनाचूर कर दो। 'अंबा–अंबा' कहकर गौओं के रँभाने में 'ओम्' का स्वर है। उनके गले में बजती हुई घंटी सुनने से ही मुक्ति मिलती है।"[25] गाड़ी में से वह एक पहाड़ को देखता है तो उसे अरुणार्द्र पर्वत की याद आ जाती है। वह सोचता है कि माँ को मरना नहीं चाहिए था। यदि वह प्रयत्न करता तो उसे भी खुश कर सकता था। वह तो बाह्य जगत और विचारों के लिए मूक थी। "टैक्टर खरीदने के बाद कुछ जल्दी या देर में माँ का मरना और अनाथ होना अनिवार्य–सा हो गया था।"[26] इसका अर्थ अगर वह उसी समय समझ गया होता तो यह अनर्थ न होता। दृसोचकर वह मुँह बाये बैठा रहता है।

निष्कर्षः इस प्रकार 'गोधूलि' जीवन के प्रति आस्था और मूल्यों के संघर्ष की कथा है। इसमें भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य सभ्यता के बीच के संघर्ष को चित्रित करते हुए उपन्यासकार भैरप्पा ने भारतीय संस्कृति व मूल्यों की जीत को अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि विदेशी सभ्यता के रँग में रँगा कालिंग गौड़ा का पोता कालिंग अमेरिका से पढ़ाई करने के बाद अपनी संस्कृति व मूल्यों को भूल जाता है किन्तु जब वह उन ग्रामीणों के मानव–मूल्यों को महसूसता है, उसमें जीवन की सच्चाई देखता है तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है और वह फिर से गाय, गौशाला, गाँव और गौड़ा परिवार का महत्व समझ गाँव की और लौटता है। कालिंग का बंबई से घर की ओर लौडना, सभ्यता से संस्कृति की ओर लौटना है। पाश्चात्य सभ्यता को छोड़कर भारतीय मूल्यों को ग्रहण करने की ओर कदम बढ़ाना है। 'गोधूलि' में विज्ञान पर विश्वास की, हिंसा पर अहिंसा की, अहम् पर प्रेम की, अनास्था पर आस्था की विजय व सामंजस्य का चित्रण किया गया है। इस प्रकार कर्नाटक के कालेनहल्लि जैसे एक ग्रामीण अँचल की कथा के माध्यम से उपन्यासकार भैरप्पा ने भारतीयता की अस्मिता को सांस्कारिक गौरव के साथ 'गोधूलि' में उभारा है। इस रूप में 'गोधूलि' एक भारतीय उपन्यास है। क्योंकि भैरप्पा ने भारतीय मूल्य इसमें कूट–कूट कर भरे हैं।

संदर्भ सूची

1. भैरप्पा एस.एल., अनुवादक– बी.आर. नारायण, गोधूलि, प्रथम संस्करण, आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली, 2011, पृ. 11
2. वही. पृ. 197
3. वही.
4. वही. पृ. 201
5. वही. पृ. 202
6. वही. पृ. 205
7. वही. पृ. 211
8. वही. पृ. 69
9. वही. पृ. 108
10. वही. पृ. 144
11. वही. पृ. 147
12. वही. पृ. 155
13. वही. पृ. 240
14. वही. पृ. 241
15. वही. पृ. 261
16. वही. पृ. 265
17. वही. पृ. 267
18. वही. पृ. 269
19. वही. पृ. 294
20. वही. पृ. 295
21. वही. पृ. 296
22. वही. पृ. 298
23. वही. पृ. 301
24. वही. पृ. 303
25. वही. पृ. 311
26. वही.